भजन

तर्जः कोई शहरी बाबू दिल लहरी बाबू

पिया रंग रंगीले पिया छैल छबीले,हाय मेरे

दिल मोहोल मे बैठ गये, मैं दर्शन करदी रवां

ऐसे मीठे बोल बोले, अमृत रस घोले, मस्तानी बन–2 के फिरां

मैं दरशन कर दी.....

(1) सतगुरू बन जब प्रीतम मिले, कहने लगे, आओ घर अब चलें

खेल मे क्यों तूं गुम हो गई, नींद ये तेरी क्यों ना टले

ऐसे वचन सुनाये, तन मन हरषाये, सुन–2 के ठरदी रवां

मैं दरशन कर दी .....

(2) मुल सगाई राखी पिया, बात वतन की बताई पिया

प्रेम डोर से बाँध मुझे, अपनी तरफ खैंच लिया।

पिया नूर जमाल, रंग इश्के गुलाल, अखियां विच भरदी रवां

मैं दरशन कर दी.....

(3) प्रेम पियाजी से करना है, मगन सदा ही रहना है

जग संसार से मुँह मोड़ के, प्रीतम के संग चलना है

मेरा घर निजधाम, मेरे शामा वर शाम,, चरना विच वसदी रवां

मैं दरशन कर दी.....